

Padma Shri



SMT. BHURI BAI

Smt. Bhuri Bai is a well known tribal painter from Madhya Pradesh.

2. Born on 10th May, 1968 in a small village called Pittol in Jhabua Madhya Pradesh, Smt. Bhuri Bai belongs to the Bhil tribal community of Madhya Pradesh. She never went to school, life was the only school to her and her siblings, also she never learned any painting skills. It is during her visit to any family weddings or any occasions in their family and village that she used to help her elder sister and mother decorating houses just like the other village girls do. They used to paint their traditional forms and designs with natural and earth colors made by them only.

3. It was during the establishment of Bharat-Bhawan, when the building designed by Charles Correa was under construction, Smt. Bhuri Bai along with her family used to work there as a laborer, it is there where she was noticed by the eminent painter J. Swaminathan, who saw her and other girls in their free time making drawings with charcoal on the rocks. Swaminathan saw the spark in young Bhuri and he knew that she can be a painter par excellence. It was his vision that took Smt. Bhuri Bai from continuing as a labour to an artist in making.

4. Smt. Bhuri Bai started her painting journey from the rocks of Bharat Bhawan to papers gradually the forms of her traditions started taking shapes on papers and canvases and wall too. She, with passing time has become a signature of Bhil painting Tradition as she has developed her own distinctive style of paintings with her vibrant use of colors and perfect amalgamation of style form and colour. Her paintings can be seen in almost each and every prestigious departments of State government, offices Indian government, business houses of India and several museums and private collections too. She has painted one whole wall of the famous Madhya Pradesh Tribal Museum as her picto-biography, that shows her journey as a baby in her village house to an celebrated artist of the highest caliber.

5. Smt. Bhuri Bai with a strong and distinct sense of painting and designing has made way for the next generations to come, she has taken an initiative to teach painting to her children, grandchildren and also her relatives who want to take painting as profession and also to preserve the tradition of Bhil paintings. She has proved that education and knowledge are two different things; knowledge can lead to the greatest paths where education lacks. She has proven that painting speaks and leave impact more than the words do, and she is committed to paint till her last breath and will continue spreading colors and forms to her next generations and several other people who love speaking in the language of forms and colors.

6. Smt. Bhuri Bai for her paintings and her contribution to Bhil Painting Tradition has won several prestigious awards like Rashtriya Devi Ahilya Samman, Rani Durgawati Samman, Shikhar Samman, Madhya Pradesh Gaurav Samman by Govt. of Madhya Pradesh etc.



श्रीमती भूरी बाई

श्रीमती भूरी बाई मध्य प्रदेश की सुविख्यात जनजातीय चित्रकार हैं।

2. 10 मई, 1968 को झाबुआ, मध्य प्रदेश के पिट्टोल नामक एक छोटे से गांव में जन्मी श्रीमती भूरी बाई मध्य प्रदेश की भील जनजाति समुदाय से ताल्लुक रखती हैं। वह कभी स्कूल नहीं गईं, उनके लिए उनका जीवन और भाई-बहन ही स्कूल थे। इसके अलावा उन्होंने कभी भी कोई चित्रकारी नहीं सीखी। उनके परिवार और गांव में किसी भी पारिवारिक शायियों या समारोहों के अवसर पर वह गांव की अन्य लड़कियों की तरह घरों की सजावट करने में अपनी बड़ी बहन और मां की मदद किया करती थी। वह केवल अपने द्वारा बनाए गए प्राकृतिक और मिट्टी के रंगों से अपने पारंपरिक रूपों और डिजाइनों को चित्रित किया करती थी।

3. चार्ल्स कोरिया द्वारा डिजाइन किया गया भारत भवन निर्माणाधीन था और श्रीमती भूरी बाई अपने परिवार के साथ एक मजदूर के रूप में वहां काम करती थीं, वहां प्रख्यात चित्रकार जे. स्वामीनाथन की नजर उन पर पड़ी। उन्होंने देखा कि वह और दूसरी लड़कियां खाली समय में चट्टानों पर कोयले से चित्र बना रही हैं। स्वामीनाथन को युवा भूरी में छिपी हुई प्रतिभा दिखाई दी। उन्हें मालूम हो गया था कि वह एक उत्कृष्ट चित्रकार बन सकती हैं। उनकी दूरदृष्टि की वजह से श्रीमती भूरी बाई एक मजदूर से चित्रकार बन गईं।

4. श्रीमती भूरी बाई ने भारत भवन की चट्टानों से लेकर कागजों तक अपनी चित्रकारी की यात्रा शुरू की और धीरे-धीरे उनकी परम्परागत आकृतियों ने कागज, कैनवास और दीवार पर भी आकार लेना शुरू कर दिया। गुजरते समय के साथ वह भील चित्रकला परम्परा की पहचान बनती गई क्योंकि उन्होंने चटकीले रंगों के प्रयोग तथा आकृति और वर्ण के सुंदर सम्मिश्रण के साथ चित्रों की अपनी अभिन्न शैली विकसित की है। उनके चित्रों को राज्य सरकार के लगभग प्रत्येक प्रतिष्ठित विभागों, भारत सरकार के कार्यालयों, भारत के व्यापारिक घरानों और अनेक संग्रहालयों और निजी संग्रहों में भी देखा जा सकता है। उन्होंने प्रसिद्ध मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय की एक पूरी दीवार को अपनी चित्रात्मक-जीवनी के रूप में चित्रित किया है, जिसमें अपने गांव के घर में एक बच्चे से लेकर एक प्रतिभावान प्रसिद्ध कलाकार की उनकी यात्रा को दर्शाया गया है।

5. श्रीमती भूरी बाई ने चित्रकला और डिजाइनिंग की गहन और विशिष्ट सूझबूझ के साथ भावी पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त किया है, उन्होंने चित्रकारी को अपने पेशे के तौर पर अपनाने के इच्छुक अपने बच्चों, पोते-पोतियों और अपने रिश्तेदारों को भी चित्रकारी सिखाने और भील चित्रकारी की परम्परा को बचाए रखने की पहल की है। उन्होंने यह साबित कर दिया है कि शिक्षा और ज्ञान दो अलग-अलग चीजें हैं। ज्ञान उन महान बुलंदियों की ओर ले जा सकता है जहां शिक्षा नहीं ले जा सकती है। उन्होंने साबित कर दिया है कि चित्रकारी बोलती है और शब्दों से ज्यादा प्रभाव छोड़ती है। उन्होंने ठान रखा है कि वह अपनी अंतिम सांस तक चित्रकारी करती रहेंगी तथा आकृतियों और रंगों की जबान से प्यार करने वाली अपनी अगली पीढ़ी और अन्य लोगों तक रंगों और आकृतियों को पहुंचाती रहेंगी।

6. श्रीमती भूरी बाई ने अपने चित्रों और भील चित्रकला परंपरा में अपने योगदान के लिए राष्ट्रीय देवी अहल्या सम्मान, रानी दुर्गावती सम्मान, शिखर सम्मान, मध्य प्रदेश राज्य का मध्य प्रदेश गौरव सम्मान आदि जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कार अर्जित किए हैं।